



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक मासिक	१३-९-२५	३	३-६

हृषि में कार्यशाला का आयोजन, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण अधिकारी किसानों को करें जागरूक : वीसी

भारकर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी और बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हृषि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हृषि के वैज्ञानिकों एवं कृषि और किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान



कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारी।

किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के करने पर भी जोर दिया। कुलपति लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में ने कहा कि कपास की फसल के उन्होंने किसानों को जागरूक करने लिए आगामी 20 दिन बहुत

महत्वपूर्ण हैं।

लगाने के साथ फसल चक्र में भी इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा जहां भी भूमि में फिडबैक लेने के साथ-साथ पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर

कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किसानों को प्रत्येक फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवानी भी सुनिश्चित की जाए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहां ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतारी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हृषि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लाट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजोब एसरी	१३-७-२६	५	२५

'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर हक्की में कार्यशाला आयोजित, कृषि अधिकारियों ने दी कई जानकारियां

गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में आई कमी

हिसार, 12 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्की के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हक्की के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगासकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया।

कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल

के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हक्की एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आर.पी. सिहांग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतारी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हक्की एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदानी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। इस एक दिवसीय कार्यशाला में हक्की एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘उत्तीर्ण समाचार’	१३-६-२५	५	३-६

कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक व कृषि विभाग किसानों को करें जागरूक : प्रो. काम्बोज

हिसार, 12 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में ‘कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव’ विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्कविं के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हक्कविं के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लाट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया।

उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उआ सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए। खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। के माध्यम से किसानों को प्रत्येक कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक

‘कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव’ विषय पर हक्कविं में कार्यशाला आयोजित, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग

फिडबैक लेने के साथ-साथ विक्रेताओं को भी प्रशिक्षण देने का आह्वान किया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहांग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतारी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हक्कविं एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की

समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लाट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा, ताकि किसानों को भी जागरूक किया जा सके। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. समेश यादव ने कार्यशाला में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में हक्कविं एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सन्धि एड्वेट्युकेशन	१३-९-२५	३	१-५

कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण

■ गुलाबी सुंडी व बरसात का प्रभाव, कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन
हिसार (सच कहूँ न्यूज़)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्किं के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हक्किं के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के



चलाया जाएगा

जागरूकता अभियान
कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा। इस एक दिवसीय कार्यशाला में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव, हक्किं एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।

अब हर सप्ताह जारी होगी एडवाइजरी

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइजरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदानी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है।

किसानों की समस्याओं का समाधान खेत में जाकर करना चाहिए

किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास की फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिल्डेक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हक्किं एवं कृषि विज्ञान केंद्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से किसानों को प्रत्येक फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवानी भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कार्यशाला में अधिकारियों एवं किसानों के साथ-साथ पेस्टीसाइड विक्रेताओं को भी प्रशिक्षण देने का आह्वान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईन ५ ज१४२७	१३-९-२६	५	३६

20 दिन कपास के लिए महत्वपूर्ण, किसानों को करें जागरूक

जगरण संवाददाता : हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्कवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हक्कवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लाट लगाने के साथ फसल



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव देसी कपास का बीज तैयार करने के दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पाषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें डगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास की फसल के लिए 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फीडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। उन्होंने

लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डा. आरपी सिंहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हक्कवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लाट आयोजित करके

किसानों को जागरूक किया गया है। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइजरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डा. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा. करमल सिंह ने कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा, ताकि किसानों को भी जागरूक किया जा सके। इस दौरान मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश यादव आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि भूमि	१३.६.२५	९	२८

‘कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव’ विषय पर हक्किंग में कार्यशाला आयोजित

कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक किसानों को करें जागरूक

प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने दिया थाग

गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में आई कमी

दृष्टि भूमि न्यूज़ में हिसार



हिसार। कुलपति प्रौ. वीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशकालय में ‘कपास को खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव’ विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्किंग के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. वीआर काम्बोज मुख्य किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए

हक्किंग के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आङ्गान किना। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रैक्टिशियन्स के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन एवं लगाने के साथ फसल चाक में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहाँ भी धूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहाँ पर किसान कपास के साथ दाढ़नी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर

करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मीसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हक्किंग एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देशी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ.

आरपी सिंहाग ने कहा कि कपास की फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतारी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के द्वारा न हक्किंग एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन एवं लगान कार्यक्रम करके किसानों को जागरूक किया गया है।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमसल सिंह ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों द्वारा उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की जीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन का दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा कपास के संयुक्त निदेशक डॉ.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उभर उत्तरी	13- ५.२६	३	1-2

कृषि विभाग किसानों को करे जागरूक : प्रो. कांबोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी मुँडी और बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व एचएयू के कपास अनुभाग की ओर से आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बतौर मुख्यालिंग संबोधित करते हुए कहा कि कपास के फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फोटोबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। एचएयू एवं कृषि विज्ञान केंद्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। संचाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	13.09.2024	---	--

कपास के आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक, कृषि विभाग किसानों को करे जागरूकः प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकूमि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकूमि के वैज्ञानिकों एवं कृषि

तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं।



लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लाट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव

दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत

कपास में गुलाबी सुंडी तथा 'बरसात के प्रभाव' विषय पर हकूमि में कार्यशाला आयोजित, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग

महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडब्राइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकूमि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	12.09.2024	---	--

'कपास में गुलाबी सुंडी व बरसात के प्रभाव' विषय पर हक्की में कार्यशाला आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशकलय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हक्की के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. आर. कामोज मुख्यालियत के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हक्की के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का



फोटो: प्रण कुलपति प्रो. डॉ. आर. कामोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

आङ्गन किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लाट लाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहाँ भी भूमि

में पोषक तत्वों की कमी है, वहाँ पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन

बहुत महत्वपूर्ण है।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हक्की एवं विभाग के

अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ी की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लाट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजवीर गांग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शेष उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदानी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है।